International Journal of Multidisciplinary Trends

E-ISSN: 2709-9369
P-ISSN: 2709-9350
www.multisubjectjournal.com
IJMT 2023; 5(9): 14-17
Received: 10-07-2023
Accepted: 15-08-2023

धीरेन्द्र सिंह चौहान
शोध छात्र शिक्षा, लाइफ लांग लर्निंग विभाग, अवधेश प्रताप सिंह वि.वि., रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

डॉ. संतोष कुमार द्विवेदी
प्राचार्य, ज्योत्सना शिक्षा महाविद्यालय, सीधी, मध्य प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
धीरेन्द्र सिंह चौहान
शोध छात्र शिक्षा, लाइफ लांग लर्निंग विभाग, अवधेश प्रताप सिंह वि.वि., रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

रीवा जिले के उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन

धीरेन्द्र सिंह चौहान एवं डॉ. संतोष कुमार द्विवेदी

सारांश
प्रस्तुत शोध पत्र रीवा जिले के उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि के अध्ययन पर आधारित है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में रीवा जिले के सभी विकासखण्डों से 06-06 विद्यालय अर्थात कुल 54 विद्यालयों का चयन दैव निर्दशन पद्धति द्वारा अध्ययन किया गया है। न्यादर्श के रूप में चयनित प्रत्येक विद्यालय से 12-12 छात्र एवं छात्राएं अर्थात कुल 1296 विद्यार्थियों का चयन दैव निदर्शन पद्धति से किया गया है। परिणामों के आधार पर कहा जा सकता है कि शहरी क्षेत्र एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों में शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर पाया गया है। उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं के बीच सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है।

कुटशब्दः रीवा जिला, उच्चतर माध्यमिक स्तर, विद्यार्थी, शैक्षिक उपलब्धि।

1. प्रस्तावना
शिक्षा अंधकार में प्रकाश की किरण है। यह निश्चित रूप से एक अच्छे जीवन की आशा है। इस ग्रह पर शिक्षा प्रत्येक मनुष्य का मौलिक अधिकार है और इस अधिकार को नकारना सही नहीं है। अशिक्षित युवा मानवता के लिए काफी खराब है। इन सबसे ऊपर, सभी देशों की सरकारों को शिक्षा का प्रसार सुनिश्चित करना चाहिए और जन जन तक शिक्षा की लहर पहुंचानी चाहिए क्योंकि विकास तभी संभव है जब राष्ट्र शिक्षित है।

शिक्षा किसी भी बड़ी पारिवारिक, सामाजिक और यहाँ तक कि राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं को भी हर करने की क्षमता प्रदान करती है। हम से कोई भी जीवन के हरेक पहलू में शिक्षा के महत्व को अनदेखा नहीं कर सकता। यह मस्तिष्क को सकारात्मक ओर मोड़ती है और सभी मानसिक और नकारात्मक विचारधाराओं को हटाती है। सबसे पहले शिक्षा समाज में ज्ञान के प्रसार में मदद करती है। यह शायद शिक्षा का सबसे उल्लेखनीय पहलू है। शिक्षित समाज में ज्ञान का तेजी से प्रसार होता है। इसके अलावा, शिक्षा द्वारा ज्ञान का एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में स्थानांतरण होता है।

शिक्षा एक उद्देश्यपूर्ण प्रक्रिया है। शिक्षा के माध्यम से छात्रों के व्यवहार में संशोधन करने का प्रयास किया जाता है। शैक्षिक उपलब्धि से तात्पर्य शिक्षण उद्देश्यों की प्राप्ति से है। छात्र शैक्षिक उद्देश्यों को प्राप्त करने में किस सीमा तक सफल हुए हैं। यही उनकी शैक्षिक उपलब्धि को दर्शाता है। छात्रों ने किस सीमा तक अपनी बौद्धिक योग्यता का विकास किया है, यही उनकी उपलब्धि का सूचक है। शैक्षिक उपलब्धि से तात्पर्य छात्रों द्वारा अर्जित ज्ञान कौशल आदि योग्यता की मात्रा से है। शैक्षिक उपलब्धि दो शब्दों से मिलकर बना है, शैक्षिक तथा उपलब्धि। विद्यार्थियों में प्राप्त होने वाली शैक्षिक उपलब्धि के फलस्वरूप विद्यार्थियों के व्यवहार में होने वाले परिवर्तन को ही शैक्षिक उपलब्धि कहा जाता है।

फ्रिमैन के अनुसार ''एक विषय विशेष या पाठ्यक्रम के विभिन्न विषयों में छात्रों के ज्ञान, समझ एवं कौशल की उपलब्धि ही शैक्षिक उपलब्धि है।''

सुपर के अनुसार ''शैक्षिक उपलब्धि से तात्पर्य है कि विद्यार्थियों में शिक्षण के उपरान्त क्या और कितना सीखा तथा वह कोई कार्य कितनी भलीभाँति प्रकार कर लेता है।''

शैक्षिक उपलब्धि से यह तात्पर्य एक निश्चित समय अवधि में विद्यालय में पढ़ाये जाने वाले विषय विशेष या विभिन्न विषयों मे प्राप्तांकों से किया जाता है। यदि कोई विद्यार्थी अच्छे अंक प्राप्त करता है तो उसकी शैक्षिक उपलब्धि में उच्च स्थान दिया जाता है। जबकि इसके विपरीत कम अंक प्राप्त करने वाले छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि को निम्न श्रेणी में स्थान दिया जायेगा। इस प्रकार किसी विषय में या विद्यालय में पढ़ाये जाने वाले विषयों में शैक्षिक उन्नति ही बालक की शैक्षिक उपलब्धि है।

2. अध्ययन की आवश्यकता

प्रस्तुत शोध विषय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि विभिन्न मनोवैज्ञानिक के कारकों यथा लिंग, ग्रामीण एवं नगरीय, विद्यालय में स्थित तुलनात्मक स्थिति की सार्थकता की पहचान करना है। प्रस्तुत अध्ययन से विद्यालयों की शैक्षिक उपलब्धि का आंकलन किया जा सकेगा तथा उनके निर्धारकों के संदर्भ में जानकारी प्राप्त हो सकेगी।

3. उद्देश्य

अतः प्रत्येक क्रिया का कुछ उद्देश्य अवश्य होता है बिना उद्देश्य के विभिन्न प्रकार कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। इन्हीं उद्देश्यों को ध्यान में रखकर शोध कार्य किया जाता है। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में निम्नलिखित उद्देश्य है –

1. शोध क्षेत्र के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों के उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र व छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

4. शोध की परिकल्पनाएँ

1. शोध क्षेत्र के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों के उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र व छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

5. शोध समस्या का सीमांकन

प्रस्तुत शोध कार्य का क्षेत्र रीवा जिला है। इसके अन्तर्गत 9 विकासखण्ड – रीवा, रायपुर कर्चुचिलयान, सिरमौर, जवा, हनुमना, गंगेव, त्यौथर, नईगढ़ी एवं मऊगंज हैं। जिला अन्तर्गत स्थित उच्चतर माध्यमिक विद्यालय इस अध्ययन के अन्तर्गत सम्मिलित होगें।

5.1 समष्टि व प्रतिदर्श : प्रस्तुत शोध अध्ययन में रीवा जिले के उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों का अध्ययन किया जाना व्यवहारिक दृष्टिकोण से संभव नहीं है। सीमित समय और सीमित व्यय में अधिक प्रयुक्त, त्रुटिहीन और विश्वसनीय परिणाम प्राप्त करने के लिए न्यादर्श का उपयोग किया गया है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में रीवा जिले के सभी विकासखण्डों से 06–06 विद्यालय अर्थात कुल 54 विद्यालयों का चयन दैव निर्दशन पद्धति द्वारा अध्ययन किया गया है। विद्यालयों का चयन करते समय यह विशेष रूप से ध्यान रखा गया कि सभी विकासखण्डों के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय ऐसे हो जो अपने–अपने क्षेत्र का प्रतिनिधित्व कर सकें तथा यह सभी संस्थान शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों से संबंधित हों।

उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करने के लिए न्यादर्श के रूप में चयनित प्रत्येक विद्यालय से 12–12 छात्र एवं छात्राएं अर्थात कुल 1296 विद्यार्थियों का चयन दैव निदर्शन पद्धति से किया गया है।

6. अध्ययन विधि

- **सर्वेक्षण अध्ययन विधि :** सर्वेक्षण अनुसंधान का एक महत्वपूर्ण अंग है। इसके द्वारा शोध समस्या के विभिन्न पक्षों से सम्बन्धित आंकड़ों का संग्रहण किया जाता है। आंकड़े मुख्य तथा वर्तमान स्तर का निर्धारण, वर्तमान स्तर की मान्य स्तर से तुलना, तथा वर्तमान स्तर को विकसित करने में महत्वपूर्ण उपादान होते हैं। सर्वेक्षण में व्यक्ति की अपेक्षा तथ्यों, परिस्थितियों तथा गणनाओं को प्राथमिकता दी जाती है।
- **साख्यिकीय विधि :** सर्वेक्षण विधि से प्राप्त ऑकड़ो का वर्गीकरण एवं सारणीयन किया गया है। जिनकी व्याख्या एवं विष्लेषण हेतु, सांख्यकीय विधियॉ प्रयोग में लाई गयी है। प्रस्तुत शोधकार्य में परिकल्पनाओं का परीक्षण सांख्यकीय विधियों द्वारा करने के लिये– Mean, प्रतिशत (%), S.D., 't' Test आदि प्रयोग किये गये है, साथ ही गुणात्मक विश्लेषण पर भी ध्यान रखा गया हैं।

7. शोध उपकरण

शोध समस्या में उपकरणों का चुनाव शोध की परिकल्पना की प्रकृति पर निर्भर करती है। प्रत्येक उपकरण एक विशेष प्रकार के आंकड़े एकत्रित करने के लिए उपयुक्त होता है। आवश्यकता एवं सुविधा की दृष्टि से शुद्ध, वस्तुनिष्ठ तथा विश्वसनीय आंकड़ों के संकलन के लिए स्वनिर्मित प्रश्नावली एवं अद्धवार्षिक परीक्षाफल के परिणामों के आधार पर शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन किया गया है।

8. पूर्व अध्ययन समीक्षा

पूर्ववर्ती अध्ययन से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से सबन्धित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान कोशों, पत्र–पत्रिकाओं, शोध पत्रों तथा अभिलेखों आदि से है, जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निमार्ण, अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने तथा कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है इनमें से मुख्य रूप से अग्रवाल, आर. एवं अरीना, विपिन (1989)[1], कपिल, एच.के. (1996)[2], राय, पी. एवं राय, सी.पी. (2010)[3], पाठक, पी.डी. (1998)[4], बालमुकुन्द, एम एवं गौधमन, के. सलेम (2009)[5], सिंह, नागेन्द्र प्रताप एवं श्रीवास्तव, अखिलेष कुमार (2021)[6] एवं राव, उदय प्रताप एवं द्विवेदी, डॉ. संतोष कुमार (2023)[7] ने शोध विधि एवं शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्धित कार्य किये है।

9. शोध क्षेत्र का सामान्य परिचय

जिला रीवा मध्य प्रदेश के उत्तरी–पूर्वी कोने में स्थित है। रीवा का नामकरण नर्मदा नदी के दूसरे नाम 'रेवा' पर आधारित है। रीवा नगर का नाम पहले षायद 'रेवा' रखा गया था। उसी का बिगड़ा रूप अब रीवा बन गया है।

इसके उत्तर में उत्तर प्रदेश के बांदा एवं इलाहाबाद जिले, पूर्व तथा पूर्व–उत्तर में उत्तर प्रदेश का ही मिर्जापुर जिला, दक्षिण में अपने राज्य का सीधी जिला और दक्षिण–पश्चिम तथा पश्चिम में सतना जिला है। इसका आकार लगभग त्रिभुज के समान है। इसका विस्तार 24.18^0 उत्तरी अक्षांश से 25^0 उत्तरी अक्षांश तथा 81.2^0 पूर्वी देक्षांश से 82.18^0 पूर्वी देक्षांश के मध्य है। रीवा जिले का क्षेत्रफल 6287 वर्ग किलोमीटर है।

10. परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या

शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य सही अर्थों में तभी प्रतिबिम्बित होता है, जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाय। इसके लिये यह आवश्यक है, कि शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयेाग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया जाय, निम्नानुसार है–

सारणी 1 : शोध क्षेत्र के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों के उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का सांख्यिकीय विश्लेषण

क्रमांक	समूह	N	M	SD	सारणी मूल्य		गणनीय 't' मूल्य
					0.01 स्तर	0.05 स्तर	
1.	शहरी क्षेत्र के विद्यार्थी	648	60.19	0.75	2.58	1.96	76.0
2.	ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थी	648	54.65	1.70			

df = 1294

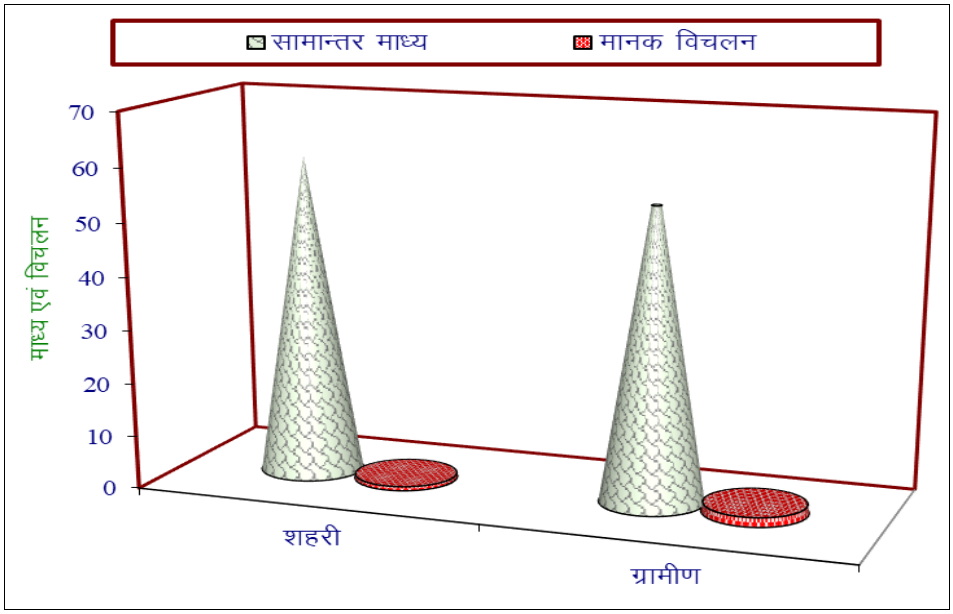

आरेख 1: शोध क्षेत्र के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों के उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का आरेखीय निरूपण

सारणी एवं आरेख क्र. 1 के अवलोकन से यह ज्ञात होता है, कि शोध क्षेत्र के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों के उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान क्रमशः 60.19 एवं 54.65 है। एवं प्रमाणिक विचलन क्रमशः 0.75 एवं 1.70 प्राप्त हुआ है। इनका *df* = 1294 है। गणना से प्राप्त 't' का मान 76.0 है, जो सारणी में दिए गए दोनों ही सार्थकता स्तर 0.05 एवं 0.01 पर मानक मान क्रमशः 1.96 एवं 2.58 से अधिक है। अतः शोध क्षेत्र के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों के उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर हैं। अतः यह परिकल्पना निरसित होती है।

सारणी 2: शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र व छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि का सांख्यिकीय विश्लेषण

क्रमांक	समूह	N	M	SD	सारणी मूल्य		गणनीय 't' मूल्य
					0.01 स्तर	0.05 स्तर	
1.	छात्र	648	50.65	1.06	2.58	1.96	1.79
2.	छात्राएँ	648	50.76	1.11			

df = 1294

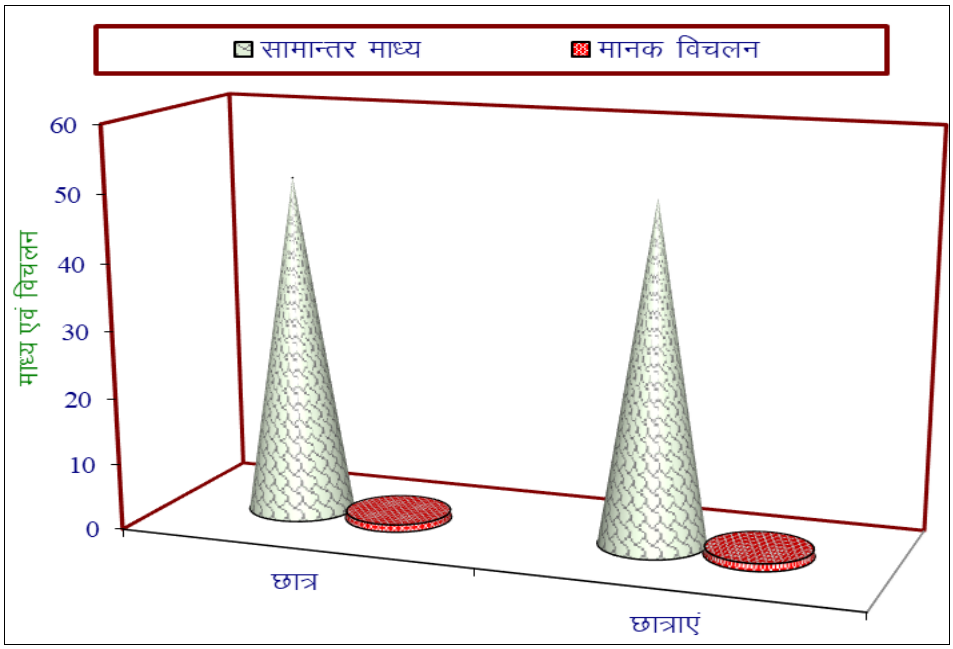

आरेख 2: शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र व छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि का आरेखीय निरूपण

उपरोक्त सारणी एवं आरेख क्रमांक 2 के अवलोकन से यह ज्ञात होता है, कि शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र व छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान क्रमशः 50.65 एवं 50.76 है। तथा मानक विचलन (SD) क्रमशः 0.92 एवं 0.99 प्राप्त हुआ है। इनका df 1294 है। गणना से 't' का मान 1.79 प्राप्त हुआ है। जो सारणी में दिए गए दोनों ही सार्थकता स्तर 0. 05 एवं 0.01 पर मानक मान क्रमशः 1.96 एवं 2.58 से कम है अत शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र व छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। अतः परिकल्पना क्र. 2 सत्यापित होती है।

11. निष्कर्ष

शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि का स्तर उच्च पाया गया है और ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों में शैक्षिक उपलब्धि निम्न हैं। अतः शहरी क्षेत्र एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों में शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर पाया गया है। उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं के बीच सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है।

12. सन्दर्भ

1. अग्रवाल, आर. एवं अरीना, विपिन (1989) : मनोविज्ञान एवं शिक्षा में मापन व मूल्यांकन, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा.
2. कपिल, एच.के. (1996) : सांख्यिकी के मूल तत्व, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा.
3. राय, पी. एवं राय, सी.पी. (2010) : अनुसंधान परिचय. आगराः लक्ष्मीनारायण अग्रवाल.
4. पाठक, पी.डी. (1998) : भारतीय शिक्षा का विकास एवं समस्याएँ, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा.
5. बालमुकुन्द, एम एवं गौधमन, के. सलेम (2009), संवेगात्मक बुद्धि, आवश्यकता एवं महत्व, साइको–लिन्गुआ, 38(2), पृ. 117.
6. सिंह, नागेन्द्र प्रताप एवं श्रीवास्तव, अखिलेश कुमार (2021), "सतना जिले में उच्चतर माध्यमिक स्तर की किशोरवय बालिकाओं के संवेगात्मक बुद्धि का उनकी शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन", International Journal of Applied Research 2021; 7(6):175-178.
7. राव, उदय प्रताप एवं द्विवेदी, डॉ. संतोष कुमार (2023) : रीवा जिले के उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् कला, विज्ञान एवं व्यावसायिक शिक्षा के विद्यार्थियों के जीवन मूल्यों का अध्ययन, International Journal of Literacy and Education; 3(2):01-03.